संथालों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक बदलाव एक ऐतिहासिक अध्ययनः धनबाद जिले के विशेष संदर्भ में।

शोध–सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

समाजिक विज्ञान संकाय

विनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद।

शोध निदेशकः–

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक,
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग,
सिंदरी महाविद्यालय सिंदरी
धनबाद (झारखण्ड)

शोधार्थीः–

सत्य नारायण गोराँई
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
विनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखण्ड।

भूमिका: (Introduction)

भारत में जनजातीयों की कुल आबादी 104.3 मिलियन है जो कि भारत की कुल जनसंख्या का 8.6% है जिनमें संथालो की कुल आबादी 6500000 हैं जो कि भील एवं गोंड जनजाति के बाद तीसरे स्थान पर है (स्टेटिस्टिकल प्रोफाइल ऑफ शेडूयलड ट्राइब्स इन इंडिया 2013, मिनीस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स)[1] । संथाल झारखण्ड की एक मुख्य जनजाति है। वर्ष 2011 कि जनगणना रिपोर्ट के अनुसार झारखण्ड में संथाल जनजातीयों की कुल आबादी 27,54,725 है, जो कि झारखण्ड की सम्पूर्ण जनजाति आबादी का 31.86 % है (भारत की जनगणना रिपोर्ट, 2011)[2] । झारखण्ड के सन्निकट बिहार में संथालो की कुल आबादी 4 लाख 6 हजार, उड़ीसा में 8 लाख, 95 हजार बंगाल में 25 लाख 12 हजार है। (एनूअल रिर्पोट 2021, मिनीस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स, Government of India)[3] । भारत में अंग्रेजों के आने से पूर्व संथालों का इतिहास मुख्यतः लोकगीतों एवं मौखिक रूप से ही एक पिढ़ी से दूसरे पिढ़ी तक पहुँचती रही। किंतु अंग्रेजों के आगमन के बाद संथालों के बारे में लिखित साक्ष्य उपलब्ध होने लगा। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि संथाल भारत में आर्य पूर्व ही आए थे। ए0 सी0 क्लोटॉन ने अपनी पुस्तक "द ऋग्वेद एण्ड वैदिक रिलिजन" में यह लिखा है कि भारत में संथाल आर्यों से पहले रह रहे थे। जिनोम अनुसंधान रिपोर्ट के अनुसार संथाल भारत में 6000 ई0 पू0 आए थे (मुर्मू, 2001,01)[4]। स्क्रेफस रूड तथा दूसरे विद्वान जिन्होने संथालों के उत्पति से संबंधित पश्चिम–उत्तर नियम का प्रतिपादन किया है उनका कहना है कि संथाल आर्यों से पहले ही खेवर एवं बोलन घाटी को पार करते हुए भारत पहॅुचा (डाल्टन, 1973,64)[5] । संथालों का अपने मूल निवास स्थान से पुरे देश में प्रवसन की प्रक्रिया लिखित स्त्रोत न होने के कारण हम उनके परंपराओं के आधार पर मात्र अनुमान ही लगा सकतें है किन्तु संथालों ने झूम खेती तथा अपनी घुमक्कड़ प्रवृति के कारण प्रवसन की कोई विशेष चिन्ह नही छोड़े अतः मानव शास्त्रियों के लिए उन दिशाओं एवं रास्तों का पता लगाना काफी कठिन है, जिनपर चलकर संथाल लोग जंगल महल आए थें और जहाँ से वे मिदनापुर वीरभूम एवं वाकुड़ा क्षेत्र में बसे थे(मुखर्जी, 1962, 12)[6]। झारखण्ड में संथालों के होने का साक्ष्य पहली बार हन्टर और रिजलें

की पुस्तक मे प्राप्त होता है। इनमें संथालों का क्रमबद्ध इतिहास तुगलक वंश के शासन काल के समय (1340ई0) से प्राप्त होता है इसमें छोटानागपुर पठार के चाय–चम्पा के परगना को संथालों का घर बोला गया है (हंटर, 1968, 69)[7]। संथाल आदिवासी दामिन–ए–कोह में स्थायी तौर पर बसने से पहले जंगल महल क्षेत्र में रहते थे (हन्टर, 1973, 211)[8]। 18वी शताब्दी के उतर्राद्ध में सरकार ने संथालों को स्थायी बनाने का प्रयास प्रारंभ किया । 1809 ई0 में मैकफरसन ने अपने जाँच पड़ताल में यह पता लगाया कि संथाल जंगल महल के मूल निवासी भुईयाँ एवं जमींदारों के शोषण से परेशान होकर दामिन–ए–कोंह में जा बसे (चौधरी, 1965, 859)[9]।

संथालों का समाजिक जीवन मुख्यतः गाँव से आरंभ होता है। इनके गाँव के प्रधान को मांझी कहते हैं (मुर्मू, 2011,45)[10]। प्रारंभ में संथाल परिवार में संयुक्त व्यवस्था प्रचलित थी किन्तु वर्तमान समय में एकल परिवार की प्रधानता बढ़ रही है। संथाल परिवारों का स्वरूप पितृ प्रधान होता है (सिंह, 2000,18)[11]। संथाल समाज में मुख्यतः तीन संस्कार पाये जाते हैं यथा–जन्म, मरण और शादी संस्कार (ट्रायसी, 1979,160)[12]। संथालों में 7 मूलवंश के अतिरिक्त 5 निम्नवंश यानि कूल 12 वंश होते हैं। इन 12 वंशों में प्रत्येक के 12 उप वंश होते हैं (माँझी, 2010, 29–31)[13]। संथालों का धर्म प्रकृतिवाद, एकेश्वरवाद, आत्मवाद, भूतप्रेतवाद आदि का मिश्रण होता है एवं यह पुरूष प्रधान होता है (माँझी, 2010, 54–57)[14]। संथालों में 13 प्रकार के शादी प्रचलित हैं। इनमें बहिर्गोत्रीय शादी होता है तथा समवंशीय शादी की मनाही है (वर्मा, 1993, 9–11)[15]। संथालों की सभ्यता एवं संस्कृति की झलक उनके वेश–भूषा, खान–पान, नृत्य, गृह निर्माण, कला, पर्व त्योंहार तथा उनके अभिवादन के तरीकों में देखने को मिलता है (शेखर, 2008, 410)[16]। संथाल वन पुत्र माने जाते हैं। इनके पर्व–त्योहार, ठोस उमंग, रंग–तरंग एवं स्वच्छंद वातावरण में होता है। इस समय समस्त संथाली समाज बाहरी दुनिया से अलग होकर भोजन, नृत्य, संगीत, मदिरा, पूजा–पाठ और आमोद–प्रमोद में व्यस्त हो जाता है (सिंह, 2000, 56–57)[17]।

संथाल संस्कृति एवं समाज में बदलाव के भिन्न क्षेत्रो जैसे उद्योगीकरण, वर्तमान शिक्षा पद्धति, विभिन्न धर्म सम्प्रदायों का प्रभाव, राजनीतिक चेतना का विकाश, सरकार की भूमिका आदि का अध्ययन करके संबंधित विषय में महत्वपूर्ण तथ्यों को एकत्रित कर तथा उनका विश्लेषण कर महत्वपूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास होगा। प्रस्तावित समस्या में धनबाद जिले के संथालों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक बदलाव के विभिन्न पहलूओं का अवलोकन किया जाएगा। इसमें संथाल संस्कृति एवं समाज के विभिन्न मान्यताओं का ध्यान रखा जाएगा।

शोध –समस्या का वृतांत (Statement of the Problem):

- 2011 की जनगणना रिर्पोट के अनुसार धनबाद में संथलों की कुल जनसंख्या 1,82,173 है। एक आर्य पुर्व की संस्कृति, धनबाद में आकर बसी और धनबाद जैसे अद्यौगिक शहर ने उनके प्राचीन सांस्कृतिक एवं सामाजिक पद्धति को कैसे प्रभावित किया तथा उसमें क्या बदलाव हुआ यह एक शोध परक विषय तथा इसमें शोध की आवश्यकता है।
- वनों में रहने वाली यह जनजातीय समाज औपनिवेशिक काल में वनों से निकलकर वर्तमान शहरों एवं गाँवों में जा कर बसे। जहाँ उनका परिचय आज के वर्तमान शिक्षा पद्धति से हुआ। इस वर्तमान शिक्षा पद्धति से उसके परम्परागत सांस्कृतिक एवं सामाजिक पद्धति को कैसे प्रभावित किया इसमें एक विस्तृत शोध की आवश्यकता है।
- मुख्यतः प्रकृति पूजक तथा भूत प्रेतों की पुजा करने वाले संथाली समाज जब औपनिवेशिक काल के दौरान जंगलों से निकलकर गाँव तथा कस्वों में जाकर बसा तो उनका परिचय विभिन्न धार्मिक संप्रदायों से हुआ इससे उसके सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवनशैली में क्या बदलाव हुआ, इसमें शोध की आवश्यकता है।

- जब संथाल समाज समय के साथ अन्य समाज और संस्कृति के सम्पर्क में आया तो उनमें राजनीतिक चेतना का विकाश हुआ। इससे संथालों की प्रचलित सामाजिक शासन पद्धति में क्या बदलाव आया तथा इनका उनके समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा इनमें शोध की आवश्यकता है।
- आजादी के बाद से ही सरकार के द्वारा जनजातीयों की स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें संरक्षित एवं संबर्धित करने हेतु प्रयास किया जा रहा है। सरकारी प्रयास से संथालों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक पद्धति में किस प्रकार का बदलाव दृष्ट्रिगोचर हो रहा है तथा उसका क्या प्रभाव हो रहा है इस पर शोध की आवश्यकता है।

विषय विवरण (State-of-the-art):

(सच्चिदानन्द 1968, 29) ने अपनी पुस्तक " ए ट्राइबल विल्लेज इन बिहार," में लिखा है कि जब संथाली जनजाति जिला, मानभूम के पूरब में जाकर बसे तो कुछ संथाली सरदारों ने हिन्दू रीति–रिवाज, धर्म तथा कूलनाम को अपनाकर स्वंय को राजपूत घोषित कर लिया।[18] (आर्चर, 1984, 573–575) ने अपनी पुस्तक "ट्राइब लॉ जस्टिस, ए रिपोर्ट ऑन संथाल्स" में लिखा है कि प्रब्रजन के चलते संथालों के धर्म एवं जाति में बदलाव हुआ है।[19] (धुर्ये, 1963,191) ने अपनी पुस्तक "दि शिडियुल ट्राइब" में लिखा है कि भारत में अंग्रेजों कें आगमन के पूर्व ही संथालों पर सनातन संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है जो कि आगे चलकर संथालों के सनातन संस्कृति को अपनाने में सहायक सिद्ध हुआ।[20] (मुर्मू, 2011,52–54) ने अपनी पुस्तक "रघुनाथ टुडू व्यक्तित्व एवं कृतित्व", में लिखा है कि भारत में स्वतंत्रता के बाद पंचायती राज पद्धति तथा कानुनी न्यायालयों की स्थापना से संथालों के परम्परागत पद्धति का विघटन होने लगा है।[21]

(वर्मा, 2009, 267–69) ने अपनी पुस्तक "झारखण्ड का जनजातीय समाज" में लिखा है कि संथाल समुदाय में शिक्षा, नगरीकरण, उद्योगीकरण, पलायन एवं पश्चिमीकरण के फलस्वरूप उनकी परम्परागत सांस्कृतिक

एवं सामाजिक मान्यताओं में बदलाव हुआ है।[22] (आर्चर, 1984, 12–15) ने अपनी पुस्तक "ट्राइबल लॉ एण्ड जस्टिस" में लिखा है कि सरकार के द्वारा उद्योगीकरण, खनन एवं सिंचाई परियोजनाओं के विकास के कारण जनजातीय समाज अपने स्थिति में द्रुतबदलाव का अहसास कर पा रहे हैं तथा यह उसके जीवन के लिए कष्टदायी है।[23]

(राय, 1968, 9) ने अपनी पुस्तक "द मुण्डाज एण्ड देयर कन्ट्री," में लिखा है कि दामिन–ए–कोह में जब संथालों का अन्य जातीयों से संबंध हुआ तो इससे संथालो की राजनीतिक, आर्थिक, एवं समाजिक स्थिति प्रभावित हुई, जिसने संथालों की प्रचलित कृषि पद्धति को खत्म कर दिया।[24]

(समीर, 2003, 45–48) ने अपनी पुस्तक "लाइफ एण्ड लाइवलीहुड इन संथाल परगना डज द राइट टू लाइभलीहुड रियली एक्जीस्ट," में लिखा है कि आरम्भ में संथाली समाज में सम्मिलित परिवार का अधिक प्रचलन था किन्तु अब अधिकांश एकल परिवार देखने को मिलता है।[25]

(अहमद, 2003, 89–90) ने अपनी पुस्तक "संथाल विद्रोह 1855", में लिखा है कि आज के समय में संथाल बाहापर्व में फूलों के रंग के स्थान पर कृत्रिम रंग तथा अबीर का उपयोग करने लगा है तथा पोचोय और हाड़िया के स्थान पर विदेशी शराब पीने लगे हैं।[26]

(साहु, 2001, 165–66) ने अपनी पुस्तक "संथाल संस्कार की रूपरेखा" में लिखा है कि संथालों में बेसरा, बेढ़िया एवं चौड़े वंश वाले निम्न वंश पाये जाते हैं तथा इन्हें हीन समझा जाता है। अतः हीनता की भावना से बचने के लिए इन्होंने अपने पुराने वंश को बदल कर दुसरे वंश वालो का नाम रख लिया है।[27]

(वर्मा, 1964,268) ने अपनी पुस्तक "झारखण्ड का जनजातीय समाज", में लिखा है कि इसाई धर्म को अपनाने के पश्चात संथाल जनजातियों की वेश–भूषा, रहन–सहन, सोच–विचार आदि तथा सांस्कृतिक मान्यताओं में, इसायत का प्रभाव देखने को मिलता है।[28]

(बोस, 1964, 265) ने अपनी पुस्तक "चेन्जइन द ट्राइबल कल्चर विफोर एण्ड आफ्टर इन्डीपेन्डेन्स", में लिखा है कि बदलाव संसार का नियम है। झारखण्ड का जनजातीय समाज भी इस बदलाव से अछुता नहीं रहा है। स्वतंत्रता के बाद बदलाव की यह प्रक्रिया अधिक बढ़ी है।[29]

(हेम्ब्रम, 2002, 10) ने अपनी पुस्तक "संथाली ए नेचुरल लैंग्वेज" में लिखा है कि वर्तमान शिक्षा तथा उद्योगीकरण के कारण संथाल गैर संथालों से भी शादी करने लगे हैं। बिटलाह की प्रथा समाप्त हो गयी है।[30]

(हन्टर,1973, 214) ने अपनी पुस्तक "एनाल्स ऑफ रूरल बंगाल", में कहा है कि संथाल जनजाति प्राचीन समय में घुमंतू खानाबदोश की तरह जीवन–यापन करते थे जो समय के साथ–साथ कृषक में परिवर्तित हो गये।[31] (दत्ता, 2009, 324–28) ने अपनी पुस्तक "दी कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार" में कहा है कि शहरों के निकट संथाली बस्तियों में शहरीकरण का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। अब तक जो संथाली अपने जीवन–यापन के लिए खेती पर निर्भर थे, वे अब दैंनिक मजदूर बन गये है। इसके अतिरिक्त शहर से दूर गाँव में रहने वाले संथाल भी अब अपने अधिशेष कृषि उत्पाद बेचने, रिक्शा चलाने या मजदूरी करने के लिए प्रतिदिन शहर आ रहे है।[32]

(सेन, 1968, 39) ने अपनी पुस्तक "दि संथाल ऑफ जगंल महल्स" में कहा है कि 1793 ई0 में लार्ड कॉर्नवालिस द्वारा प्रारंम्भ की गई इस्तमरारी व्यवस्था से जमीन पर निज सम्पति का प्रचलन का शुरू हुआ। इसने संथालों की माँझी पद्धति एवं समाजिक जीवन पर आघात कर कृषि कलह को शुरू दिया। इस पद्धति से पहले संथालों की समाजिक पद्धति में माँझी पद्धति या मंडली पद्धति का मुख्य स्थान था। इस पद्धति ने संथाली समाज के प्रारंभिक ढाँचे को अस्त–व्यस्त कर दिया।[33] (ए0 आशीष, 2019, 14180–14185) ने अपने शोध शीर्षक "झारखण्ड में जनजातीयो के विस्थापन का उनकी समाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव" में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया है कि उद्योगीकरण के कारण आदिवासी या जनजातीय समुदाय के समक्ष समाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव का खतरा शुरू हो गया है।[34] (कश्यप, 2016, 181–184) नें

अपने शोध शीर्षक "झारखण्ड के आदिवासीयों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नृजातीय अस्तित्व एवं अस्मिता " में इस बात का उल्लेख किया है कि आदिवासीयों की अपनी विशिष्ट पहचान को बचाए रखने के लिए विभिन्न काल खण्डो में विभिन्न समुदायों द्वारा चुनोती प्रस्तावित किया है।[35] (हुसैन, 2020, 295–298) ने अपने शोध शीर्षक "A Geographical Study of Socio-Economic Changes of Santhal Tribe of Jharkhand" में लिखा है कि सरकार द्वारा चलाए जा रहें विभिन्न कार्यक्रम एवं योजनाओं से संथालों की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव हुआ है।[36]

समस्या–अन्वेषण (Problem to be Investigated):

- आजादी के बाद से ही भारत में उद्योगीकरण की प्रक्रिया बहुत तेजी से बढ़ा इसने सभी को प्रभावित किया। संथाली समाज भी इस प्रक्रिया से अछुता नहीं रहा। उद्योगीकरण की प्रक्रिया में धनबाद के संथाली समुदाय के सांस्कृतिक जीवन में किस तरह का बदलाव आया इसको जानने की आवश्यकता है।
- शिक्षा अंधेरे में आलोक रश्मि का कार्य करता है। जब संथाल समुदाय वर्तमान शिक्षा पद्धति से जुड़े तो वे भी वर्तमान शिक्षा को ग्रहण करने लगें। इससे उनके परम्परागत मान्यताऍ एवं विश्वास में क्या बदलाव आया इसको अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- समय के साथ–साथ संथाली समुदाय विभिन्न धर्म समुदाय के संम्‍ पर्क में आया इससे उनके जो प्राचीन धार्मिक मान्यताएँ एवं सामाजिक नियम है उनमें कितना बदलाव हुआ इसकों अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- वर्तमान शिक्षा के क्रम में संथालो में राजनीतिक चेतना जाग्रत हुई जिससे उन्होनें देश की राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेना प्रारंभ किया। इससें संथालों की जो प्रारंभिक सामाजिक शासन तंत्र है उसमें क्या बदलाव हुआ इसको अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- सरकार द्वारा जनजातीयों के लिए बनाए जाने वाले नियम एवं नीतियों के कारण संथालों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति में क्या बदलाव हुआ है इसको उजागर करने की आवश्यकता है।

शोध के उद्धेशय: (Objective of Research)

- धनबाद जिले के संथालों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक बदलाव में उद्योगीकरण की भूमिका का अध्ययन करना है।
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में वर्तमान शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में अन्य धर्म सम्प्रदाय की भूमिका का अध्ययन करना।
- धनबाद जिले के संथालों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव में राजनीतिक भूमिका का अध्ययन करना।
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज में हुए बदलाव में सरकार की भुमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न: (Research Question)

- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में उद्योगीकरण का क्या योगदान है ?
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में वर्तमान शिक्षा पद्धति का क्या योगदान है ?
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में विभिन्न धार्मिक समुदायों का क्या योगदान है ?
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में राजनीतिक जागृति की क्या योगदान है?
- धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज के बदलाव में सरकार का क्या योगदान है ?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा (Research Design & Methodology) :

प्रस्तावित शोध कार्य के क्रम में यथासंभव ऐतिहासिक, विवरणात्मक, तुलनात्मक, एवं विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया जाऐगा क्योंकि प्रस्तावित शोध विषय के लिए उपरोक्त विधियाँ पथ–प्रदर्शक का कार्य कर सकता है, जिसके माध्यम सें शोध कार्य आसानी से सम्पूर्ण हो सकेगा।

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध कों निम्न भागो में विभाजित किया जाएगाः–

भूमिका

प्रथम अध्यायः– संथाल संस्कृति एवं समाज तथा उद्योगीकरण

द्वितीय अध्यायः– संथाल संस्कृति एवं समाज तथा वर्तमान शिक्षा

तृतीय अध्यायः– संथाल संस्कृति एवं समाज एवं विभिन्न पंथ–समुदाय

चतुर्थ अध्यायः– संथाल संस्कृति एवं समाज तथा राजनीतिक चेतना

पंचम अध्यायः– संथाल संस्कृति एवं समाज तथा सरकार की भूमिका

उपसंहार

ग्रंथ सूची

उपरोक्त समस्त अध्यायों का वर्णन, विश्लेषण तथा मुल्यांकन सर्वमान्य तथ्यो के आधार पर किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध प्रबंध में धनबाद कें संथाल संस्कृति एवं समाज के विभिन्न कारकों का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा। धनबाद के संथाल संस्कृति एवं समाज को उद्योगीकरण, वर्तमान शिक्षा, विभिन्न धर्म–संप्रदाय, राजनीतिक जागृति एवं सरकार की भूमिका ने कैसे प्रभावित किया तथा इसका क्या प्रभाव पड़ा, प्रस्तावित शोध के द्वारा इनका विस्तृत अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

डाटा संग्रहण एवं विश्लेषण में उपकरणों का प्रयोग (**Tools to be used in the Collection of data and analysis**):

प्रस्तावित शोध प्रबंध संथालो में सांस्कृतिक एवं सामाजिक बदलाव के शोध कार्य को पूर्ण करने हेतू विषय से संबंधित विद्वानों एवं क्षेत्र विशेष के संथालों से भेंट वार्ता माध्यम से महत्वपूर्ण तथ्यों को एकत्रित किया जाएगा। साथ ही विभिन्न अभिलेखागारों में रखे विषय से संबंधित दस्तावेजों का स्व–अध्ययन किया जाएगा एवं स्व–निर्मित प्रश्नावालियों का उपयोग कर ऑकड़ों को एकत्र किया जाएगा।

संथाल संस्कृति एवं समाज से संबंधित पुस्तकों का गहन अध्ययन किया जाएगा। इसके लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता, प्रादेशिक पुस्तकालय खूदाबक्श पुस्तकालय पटना, राज्य पुस्तकालय रॉची, जनजातीय शोध संस्थान रॉची, केन्द्रीय पुस्तकालय मोरहाबादी रॉची तथा अल्बर्ट ऐक्का पुस्तकालय रॉची तथा अन्य राष्ट्रीय पुस्तकालय का उपयोग किया जाएगा। साथ ही विभिन्न पत्र–पत्रिका, शोध पत्रिका, आर्टिकल्स, इन्टरनेट, मोबाइल, फोटो कैमरा, टेपरिर्कोडर तथा कम्प्यूटर का भी उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित कार्य का महत्व (Significance of Proposed work) :

संथाल संस्कृति एवं समाज आर्यो से पहले की मानी जाती है। अत्यन्त पुरानी होते हुए भी संथाल संस्कृति एवं समाज में काफी हद तक आज भी मूल तत्व बना हुआ है। वर्तमान समय में एक ओर जहाँ अन्य समाज एवं संस्कृति का जोरो से आधुनिकीकरण हो रहा है वहीं संथाल समाज में यह प्रवृति धीमी है।

इस प्रस्तावित शोध अध्ययन के माध्यम से धनबाद के संथाल संस्कृति एवं समाज के विभिन्न पहलुओ से जनमानस परिचित होंगे। आज के इस वर्तमान युग में उद्योगीकीकरण, शिक्षा, धर्म संप्रदाय, राजनीतिक जागृति तथा सरकारी योजनाओ के कारण संथालो की परंम्परागत संस्कृतिक एवं समाजिक पद्धति में हो रहें बदलावो से आम जनमानस परिरिचत होंगे तथा इन बदलावो के कारण संथालो के सम्मुख जो प्रजातीय पहचान की जो समस्या उत्पन्न हो रहीं है उससे सभी अवगत होंगे।

समकालीन ज्ञान में योगदान (**Contribution to the existing Knowledge**):

प्रस्तावित शोध प्रबंध के माध्यम से धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज में बदलाव के अब तक जिन तथ्यों की जानकारी है, उनमें कुछ नए आयाम जुड़ेगें जो कि इतिहास के पुनः निर्माण तथा विषय के विद्धानों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए एक नवीन पथ निर्देशक का कार्य करेगा तथा पुर्व प्रचलित धारणाओं में बदलाव लायेगा।

भविष्य का कार्य: (Future work)

प्रस्तावित शोध प्रबंध की एक निश्चित सीमा होगी जो कि धनबाद जिले के संथाल संस्कृति एवं समाज में बदलाव के शोध कार्य से संबंध होगा। इससे भविष्य में शोधार्थियों के लिए नवीन अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त होगा। आनेवाले समय में प्रस्तावित शोध कार्य पर सेमिनार, कार्यशाला आदि का आयोजन करके विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि किया जा सकेगा तथा भविष्य में इसे पुस्तक का रूप देकर संथालों के सांस्कृतिक एवं समाजिक जीवनपद्धति के बदलते स्वरूप से लोगों को अवगत कराया जा सकता हैं तथा इस विषय पर शोध पत्रों का प्रकाशन कराने पर जोर दिया जाएगा।

संदर्भ–सूची: (Related reference)

1.स्टेटिस्टिकल प्रोफाइल ऑफ शेडूयलड ट्राइब्स इन इंडिया 2013, मिनीस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स

2. भारत की जनगणना रिपोर्ट, 2011

3.एनूअल रिर्पोट 2021, मिनीस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स, Government of India

4. मुर्मू, दुखिया,लघु शोध प्रबंध, *"मातृभाषा की समस्या"* (संताली मातृभाषा के संदर्भ में), 2001, पृ0सं0 01

5.डाल्टन, ई0टी0,*"डिस्क्रिप्टिव एथनोलॉजी ऑफ बंगाल"*, British Library, Historical Print Editions,कलकत्ता, पुनर्मुद्रित, 1973, पृ0सं0– 64

6. मुखर्जी, चारूलाल,*"दि संथाल्स"*, Gyan Publishing House, कलकत्ता, द्वितिय संस्करण, 1962, पृ0सं0–12

7. हन्टर,*"ए स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ बंगाल"*, Nabu Press, खण्ड–16, 1968, पृ0सं–69

8. हन्टर, डब्ल्यू0डब्ल्यू0,*"एनाल्स ऑफ रूरल बंगाल"*, Hansebooks,स्मिथ एल्डर एण्ड कम्पनी लन्दन, पुनर्मुद्रित, दिल्ली, 1973, पृ0सं0–211

9. चौधरी, पी0सी0 राय,*"डिस्ट्रिक्ट गेजेटियर्स संथाल परगना"*,सचिवालय प्रेस, पटना, 1965, पृ0सं0–859

10.मुर्मू, दुखिया,*"रघुनाथ टुडू व्यक्तित्व एवं कृतित्व"*,प्यारा करकेट्टा फाउणडेशन, बरियातु, राँची, 2011, पृ0सं0–45

11. सिंह, कुमार सत्येन्द्र,*"संताल जीवन और संस्कृति"*, एग्रेरियन एसिस्टेन्स एसोसियेशन, दुमका, 2000, पृ0सं0–18

12. ट्रॉयसी, जे0,*"ट्राइबल रिलिजियनः रिलीजियस बीलिफस एण्ड प्रैक्टिसेज एमंग दि संथाल्स"*, मनोहर पब्लिकेशन, 1979, पृ0सं0–160

13. माँझी, धनेश्वर *"संथाली लोक कथा एक अध्ययन"*,प्यारा करकेट्टा फाउणडेशन, बरियातु, राँची, 2010, पृ0सं0–29–31

14.माँझी, धनेश्वर *"संथाली लोक कथा एक अध्ययन"*,प्यारा करकेट्टा फाउणडेशन, बरियातु, राँची, 2010 पृ0सं0–54–57

15. वर्मा, यू0के0,*"संथाल संक्षिप्त मोनोग्राफ सीरीज"*, जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी, राँची, 1993, पृ0सं0–9–11

16. शेखर, *"झारखण्ड के लोकचित्र कला (आलेख)"*, झारखण्ड एन्साइक्लोपीडीया, खण्ड–4, 2008, पृ0सं0–410

17.सिंह, कुमार सत्येन्द्र,*"संताल जीवन और संस्कृति"*, एग्रेरियन एसिस्टेन्स एसोसियेशन, दुमका, 2000, पृ0सं0–56–57

18. सच्चिदानन्द, *"ए ट्राइबल विल्लेज इन बिहार"*, ओरियेन्ट पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1968, पृ0सं0–29

19. आर्चर, डब्ल्यू0 जी0, *"ट्राइबल लॉ एण्ड जस्टिस, ए रिपोर्ट ऑन संथाल्स,"* कनसेप्ट पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984, पृ0सं0–573–75

20. धुर्यो, जी0एस0, *"दि शिडियुल ट्राइब"*, पॉपूलर प्रकाशन, बम्बई, 1963, पृ0सं0–191

21. मुर्मू, दुखिया, *"रघुनाथ टुडू व्यक्तित्व एवं कृतित्व"*, प्यारा करकेट्टा फाउणडेशन, बरियातु, राँची, 2011, पृ0सं0–52–54

22. वर्मा, यू0के0, *"झारखण्ड का जनजातीय समाज"*, सुबोध ग्रंथमाला, राँची, 2009, पृ0सं0–267–69

23. आर्चर, डब्ल्यू0 जी0,"ट्राइबल लॉ एण्ड जस्टिस" ,कनसेप्ट पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984, पृ0सं0–12–15

24. रॉय, एस0सी0, *"द मुण्डाज एण्ड देयर कन्ट्री,"* एशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1968, पृ0सं0–9

25. समीर, *"लाइफ एण्ड लाइवलीहुड इन संथाल परगना डज द राइट टू लाइभलीहुड रियली एक्जीस्ट,"* इकोनामी एण्ड पॉलिटिकल विकली, सितम्बर 27, नईदिल्ली, 2003, पृ0सं0–89–90

26. अहमद, रियाज एम, *"संथाल विद्रोह 1855"*, Vani Parkshan, संथाल एकेडमी ऑफ सिद्धो–कान्हू युनीवर्सिटी, दुमका, 2003, पृ0सं0–89–90

27. साहु, उमाशंकर, *"संथाल संस्कार की रूपरेखा"*, सहयोग पुस्तक कुटीर, नई दिल्ली, 2001 पृ0सं0–165–66

28.वर्मा, यू0के0, *"झारखण्ड का जनजातीय समाज"*, सुबोध ग्रंथ माला, राँची, 1964, पृ0सं0–268

29. बोस, एन0 के0, *"चेन्जइन द ट्राइबल कल्चर विफोर एण्ड आफ्टर इन्डीपेन्डेन्स"*, Indian anthropological association मैन इन इन्डीया, वोल्यूम–44, 1964, पृ0सं0–265

30. हेम्ब्रम, पी0सी0, *"संथाली ए नेचुरल लैंग्वेज"*, उषा हेम्ब्रम 476–दक्षिणायन, सेक्टर–4, प्लॉट–19 द्वारका नई दिल्ली, 2002, पृ0सं0–10

31. हन्टर, डब्ल्यू0डब्ल्यू0, *"एनाल्स ऑफ रूरल बंगाल"*, Hansebooks, स्मिथ एल्डर एण्ड कम्पनी लन्दन, पुनर्मुद्रित, दिल्ली, 1973, पृ0सं0–214

32. दत्ता, के0के0, *"दी कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार"*, Anantlal Thakur, Patna, खण्ड–8, भाग–II , के0पी0 जायसवाल इन्सटीच्युट, पटना, 2009, पृ0सं0–324–28

33. सेन, सूचिब्रत, *"दि संथाल ऑफ जगंल महल्स"*, रतना प्रकाशन, कलकत्ता, 1968, पृ0सं0–39

34. ए0, आशीष *"झारखण्ड में जनजातियों के विस्थापन का उनकी समाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव"* Research Journal for Interdisciplinary Studies: ISSN 2278-8808, 2019, Vol:8/61, पुणे, पृष्ठ संख्या– 14180–14185

35. कश्यप S.R. *"झारखण्ड के आदिवासीयों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नृजातीय अस्तित्व एवं अस्मिता"* Journal of Socio-Educational & Cultural Research, ISSN 2394-2878, 2016, Vol:2, Varanashi, पृष्ठ संख्या– 181–184

36. हुसैन दिलदार *"A Geographical Study of Socio-Economic Changes of Santhal Tribe of Jharkhand"* International Research Journal of Management Sociology & Humanity (IRJMSH) ISSN 2277-9809, 2020, Vol:11, New Delhi, पृष्ठ संख्या– 295–298 (www.irjmsh.com)